06. भारत के प्रमुख धर्म (Major Religions of India)

आजीवक सम्प्रदाय

- इस संप्रदाय के संस्थापक मक्खलिपुत्र गोसाल थे।
- अशोक के पिता बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय को मानते थे। अशोक ने आजीवक संप्रदाय के भक्तों को बहुत से गुफा (नागार्जुन या बराबर पहाड़ी के गुफा, सुदामा गुफा, दशरथ गुफा कर्ण गुफा, चौपाड़ गुफा, विश्व झोपड़ी) दान में दिया था।

भागवत धर्म

- इसके संस्थापक/प्रवर्तक वासुदेव (कृष्ण) थे। इस धर्म में सबसे अधिक जोर भक्ति पर दिया गया। भागवत संप्रदाय वाले बलि, कर्मकाण्ड तथा पशु हत्या के विरोध में थे।
- जैन परम्परा के अनुसार वासुदेव कृष्ण जैन धर्म के 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालिन थे।
- इस धर्म में मुख्य रूप से कृष्ण की पूजा होती है।
- इस धर्म का सबसे लोकप्रिय स्वरूप 'वैष्णव धर्म' है।
- इनका निवास स्थान मथुरा है।
- इस धर्म का उदय मौर्योत्तर काल में हुआ था। इसकी प्रारंभिक जानकारी उपनिषद में मिलती है। परंतु मेगास्थनीज द्वारा रचित इंडिका नामक पुस्तक में बताया गया है कि मौर्य काल में भागवत धर्म का प्रचलन था। उन्होंने इंडिका में लिखा है कि शूर सैन यानि मथूरा के लोग हेराक्लीज (कृष्ण) के उपासक थे।
- हेराक्लीज कृष्ण का यूनानी रूपान्तरण था।
- शुंग वंश के नौवें शासक भागभ्रद के दरबार में हेलियोडोटस आया था और वह भागवत धर्म अपना लिया। हेलियोडोटस भगवान विष्णु के सम्मान में मध्य प्रदेश के विदिशा (बेसनगर) में एक स्तम्भ लेख का निर्माण कराया जिसे गरुड़स्तम्भ लेख कहा गया।
- इस स्तम्भ लेख पर उसने ''ओम नमो भगवते वासुदेवाय'' लिखवाया।
- इस धर्म का वर्णन सबसे पहले छन्दोग्य उपनिषद में देवकीपुत्र एवं अंगीरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का वर्णन मिलता है।
- भागवत धर्म के सिद्धांत श्रीमदभागवत गीता में लिखा गया है। भागवतगीता के रचयिता वेदव्यास है।
- श्रीमदभागवत गीता में मोक्ष प्राप्ति के लिए जन्म, कर्म, तथा भक्ति को समान महत्व दिया गया है। भागवतगीता की मुख्य शिक्षा निष्काय कर्मयोग (कर्म करो फल की चिन्ता मत करो) को बताया गया है।
- भागवत सम्प्रदायों में भक्ति के रूपों कि संख्या 9 है।
- कृष्ण के समर्थक को भागवत कहा जाता है।
- पंचरात्र, व्यूहवाद एवं चतुर्व्यूह सिद्धांत भागवत धर्म से संबद्ध थे।

शैव धर्म

- शिव को मानने वाले को शैव धर्म कहा जाता है और उसके उपासक को शैव कहा जाता है।
- इसमें भगवान शिव की उपासना की जाती है। इसमें शिवलिंग की पूजा की जाती है।
- शिवलिंग का पहला साक्ष्य सिंधु सभ्यता में मिला है। किन्तु यह प्रमाणिक नहीं है।
- शिवलिंग को पहला प्रमाणिक साक्ष्य मत्स्य पुराण में मिलता है।
- शैव धर्म को दक्षिण भारत में मानने वाले अधिक है।
- शैव धर्म को मानने वाले लोकप्रिय वंश- पल्लव वंश, चोल वंश, राष्ट्रकूट वंश तथा चालूक्य वंश थे।
- गुप्तकाल में शैव धर्म अपने चर्मोत्कर्ष पर थे।
- शैव धर्म में परमात्मा, जिवात्मा और बंधन के परिकल्पना की गई है।
- नयनारों ने पल्लव काल में शैव धर्म का प्रचार किया था।
- शैव सिद्धांत के चार पद - विद्या, योग, कर्म और चर्चा।
- शैव सिद्धांत के तीन पदार्थ - पशु, पाश और पति।

➢ **शैव धर्म का प्रमाण–**

1. प्रारंभिक प्रमाण- हड़प्पा सस्कृति
2. ऋग्वेद में शिव को रूद्र (शिव) कहा गया।
3. अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति एवं भूपति कहा गया।
4. मत्स्य पुराण में लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन है।
5. तैतरेय अरण्यक में रूद्र की पत्नी पार्वती को पद्मा, उमा, गौरी एवं भैरवी कहा गया।

- दक्षिण भारत में शैव आंदोलन 63 नयनार संतों ने चलाया था।
- मेगास्थनीज ने अपनी यात्रा वृत्तांत में डायनोसिस नाम से शिव का उल्लेख करते हुए भारत में शिव पूजा का विवरण किया है।

➢ **वामन पुराण के अनुसार शैव धर्म को मुख्यतः 4 भागों में बांटते हैं–**

1. पशुपतिक

- ये शैव धर्म की सबसे प्राचीन शाखा है। इन्हें पंचार्थीक भी कहते है।

- पशुपतिक संप्रदाय के संस्थापक लकुलिश थे। इसमें शिव के 18 अवतार का वर्णन मिलता है।
- लकुलिश को शिव भगवान के 18 अवतारों में से एक माना जाता है।
- पशुपत संप्रदाय का प्रमुख सैद्धांतिक ग्रंथ पशुपत सूत्र है।

2. कापालिक

- ये नर खोपड़ी में भोजन तथा जल ग्रहण करते है। ये मदिरापान करते हैं।
- अस्थि के भस्म को पूरे शरीर में लगाते हैं।
- कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव माने जाते है।
- इस संप्रदाय का मुख्य केन्द्र श्रीशैल नामक स्थान था। Ex. नागा साधु कापालिक होते हैं।

3. लिंगायत

- शैव धर्म की इस शाखा का विकास कर्नाटक में अधिक हुआ।
- इसका प्रारम्भ अल्लभ प्रभु तथा उनके शिष्य वासव ने किया।
- इसमें शिव की उपासना की जाती है।
- ये शिवलिंग की पूजा करते हैं। इस शाखा के लोग शव को जलाते नहीं थे, बल्कि दफनाते थे।
- लिंगायत संप्रदाय दक्षिण भारत में बहुत लोकप्रिय था।
- लिंगायत संप्रदाय को जंगम/विरशिव संप्रदाय भी कहा जाता है।

3. कालामुख

- शिव महापुराण में कालामुख संप्रदाय के मतावलंबियों को महाव्रतधर कहकर पुकारा गया है।
- महाव्रत लोग अपने शरीर पर चिता की भस्म लपेटकर रहा करते थे।
- दसवीं शताब्दी में मत्स्येन्द्र नाथ ने नाथ संप्रदाय की स्थापना की।
- इस संप्रदाय का व्यापक प्रचार-प्रसार बाबा गोरखनाथ ने किया।
- शुद्ध संप्रदाय के संस्थापक श्रीकांताचार्य थे।
- राष्ट्रकूटों ने ऐलोरा में स्थित शैवों के कैलाशनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था।
- प्रसिद्ध राजराजेश्वर शैव मंदिर तंजौर में स्थित है। इसे वृहदेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण चोल शासक राजराज प्रथम ने करवाया था।
- शिव के महान उपासक कुषाण राजा ने सर्वप्रथम अपने राजमुद्रा पर शिव एवं नंदी का अंकन करवाया था।

वैष्णव धर्म

- भगवत धर्म से ही वैष्णव धर्म का विकास छठी शताब्दी में हुआ था।
- इसमें भगवान विष्णु का अधिक महत्व है। इसकी चर्चा पुराणों तथा उपनिषदों में मिलती है।
- इसके उपासक को पंचरात्र कहते है।
- विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में एतरेय ब्राह्मण में किया गया है।
- भगवान विष्णु को अपना ईस्ट देव मानने वाले उपासकों को वैष्णव के रूप में जाना जाता है।

➢ **मत्स्य पुराण में भगवान विष्णु के 10 अवतारों की चर्चा है–** 1. मत्स्य 2. कूर्म 3. वराह 4. नृसिंह 5. वामन 6. परशुराम 7. राम 8. बलराम 9. बुद्ध 10. कल्कि।

- परशुराम, कृष्ण तथा बौद्ध विष्णु के प्रमुख अवतार थे।
- विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय वराह अवतार है। जिसका प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में है।
- वायु पुराण में कृष्ण सहित वृष्णि वीरों का भी उल्लेख है।

वृष्णि वीर	
1. वासुदेव कृष्ण	देवकी के पुत्र
2. संकर्षण	रोहिणी पुत्र
3. प्रद्युम्न	रूक्मिणी पुत्र
4. अनिरुद्ध	प्रद्युम्न पुत्र
5. साम्ब	जाम्बवती पुत्र

- इस धर्म को अवतारवाद भी कहते हैं। इसे मानने वाले पूर्णत: शाकाहारी होते थे।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम उल्लेख श्रीमदभगवत गीता में मिलता है।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर प्राप्ति का मार्ग भक्ति को बताया गया है।
- वल्लभाचार्य, चैतन्य महाप्रभू, रामानन्द, कबीर दास, रामानुजाचार्य आदि वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध भक्त थे।
- स्कंदगुप्त के जूनागढ़ अभिलेख की शुरूआत भगवान विष्णु के स्तूति से होती है।
- देवगढ़ के दशावतार मंदिर का निर्माण गुप्त काल में भगवान विष्णु के सम्मान में किया गया।
- कालांतर में कृष्ण को विष्णु का रूप महाभारत काल में माने जाने के कारण भागवत् धर्म वैष्णव धर्म में परिवर्तित हो गया।
- वैष्णव धर्म का सर्वाधिक विकास गुप्त काल में चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में हुआ। इनके दरवार में नौ विद्वान रहते थे। जिसे नवरत्न कहा जाता था।
- गुप्तकाल में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार जोरो पर था। यहाँ तक कि इण्डोनेशिया, मलाया, कम्बोडिया दक्षिण पूर्व एशिया और हिन्द-चीन जैसे विदेशी स्थलों पर भी इस धर्म का खूब प्रचार-प्रसार हुआ।
- वैष्णव धर्म का विकास दक्षिण भारत में बहुत तेजी से हुआ। दक्षिण भारत में इस धर्म को मानने वाले को अलवर कहा गया। दक्षिण भारत में 12 अलवार संतो को विवरण मिलता है।
- भारत में वैष्णव धर्म का केन्द्र तमिल प्रदेश था।
- इन सब में तीरूमंगई सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं अंडाल एक मात्र महिला संत थी।

प्रमुख सम्प्रदाय, मत व उनके आचार्य		
प्रमुख सम्प्रदाय	**मत**	**आचार्य**
वैष्णव सम्प्रदाय	विशिष्टाद्वैत	रामानुज
ब्रह्म सम्प्रदाय	द्वैतवाद	मध्वाचार्य
रूद्र सम्प्रदाय	शुद्धाद्वैत	वल्लभाचार्य
सनक सम्प्रदाय	द्वैताद्वैत	निम्बार्काचार्य

यहुदी धर्म

➢ **संस्थापक–** मुसा (अब्राह्म)

➢ **प्रमुख केन्द्र–** जेरूसेलम

☛ एकमात्र यहुदियों का देश- इजरायल है।
☛ यह विश्व के प्राचीनतम धर्मों में से एक माना जाता है।
☛ इसे दुनिया का प्रथम एकेश्वरवादी धर्म माना जाता है।
☛ इस धर्म की उत्पत्ति स्थान फिलिस्तीन है।
☛ इसके धार्मिक स्थल को सिनेगार कहते है।
☛ इसे इब्राह्मी धर्म भी कहा जाता है।

➢ **प्रमुख धार्मिक पुस्तक**

☛ तोरह/ओल्डटेस्टामेंट या मुसा संहिता

ईसाई धर्म

☛ इस धर्म के संस्थापक ईसा मसिह थे।
☛ इनका जन्म वेंथलेहम नामक गांव में हुआ था। जो जेरूसेलम में पड़ता है। इनके पिता जोसेफ तथा माता मैरी थी।
☛ ईसा मसिह को जीसस भी कहा जाता था।
☛ मसिहा का शाब्दिक अर्थ- परमपिता के पुत्र होता है।
☛ प्रमुख धार्मिक ग्रंथ → बाइबिल
☛ प्रमुख धार्मिक पूजा स्थल → चर्च या गिरजाघर
☛ प्रमुख शिष्य → एड्रूस और पिटर (मछुआरा)
☛ जाति → बढ़ई/Carpenter
☛ पूरे विश्व में ईसाई धर्म के मानने वाले की संख्या सबसे अधिक है। इस धर्म की उत्पत्ति फिलिस्तीन में हुई।
☛ इसका प्रमुख दिन रविवार होता है।
☛ ईसा मसिह का शिष्य सेंट टॉमस भारत के केरल में आकर ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार किया था।
☛ इसाई धर्म के धार्मिक नेता या प्रमुख को पोप या पादरी कहा जाता है।
☛ पोप के कार्यालय को पापेसी कहा जाता है।
☛ पोप का निवास स्थल रोम (इटली)में है।
☛ ईसा मसिह द्वारा चुने गए 12 अनुयायियों को देवदूत माना गया।
☛ इस धर्म की दो मुख्य शाखाएँ है- कैथोलिक और प्रोटेस्ट।
☛ इनके मृत्यु तथा पुनर्जन्म को इस्टर के रूप में मनाया जाता है।
☛ इनके जन्म दिवस को क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है तथा मृत्यु पर Good friday मनाया जाता है।

➢ **बाईबिल को दो भागों में बांटा गया है–**

1. ओल्ड टेस्टामेंट - यह यहुदी इतिहास से संबंधित है।
2. न्यू टेस्टामेंट - इसमें ईसाइयों का धर्म संबंधित विचार है।

☛ इनका प्रतिक चिन्ह क्रॉस है।
☛ इनको शूली पर चढ़ाने वाला रोमन गवर्नर पोंटियस (33 ई०) था।

इस्लाम धर्म

☛ इस्लाम अरबी भाषा का शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ अल्लाह को समर्पण होता है।
☛ इनके धार्मिक स्थान को मस्जिद कहा जाता है।
☛ इस धर्म के संस्थापक पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब को माना जाता है।
☛ इनका जन्म 570 ई० में मक्का में हुआ था।
☛ इनके पिता का नाम अब्दुल्लाह तथा माता का नाम अमीना था।
☛ इनकी पत्नी का नाम खदीजा, पुत्री का नाम फातिमा थी।
☛ इनको ज्ञान की प्राप्ति 610 ई० में हीरा नामक गुफा में हुआ था। जो मक्का में स्थित है।
☛ मक्का से मदीना के यात्रा को ही मुस्लिम संवत् के नाम से जाना जाता है। जो 622 ई० में प्रारंभ हुआ। इसे हिजरी संवत् भी कहते है।
☛ हिजरी संवत् के एक वर्ष में 354 दिन होता है और 12 महीना होता है।
☛ इनके द्वारा कुरान की शिक्षा का उपदेश दिया गया। जो इस धर्म की सबसे प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है।
☛ इनकी मृत्यु 632 ई० में मदीना में हुई और वही इनको दफना दिया गया।
☛ मक्का और मदीना दोनों धार्मिक स्थल सऊदी अरब में स्थित है।
☛ अली मुहम्मद साहब के दामाद थे। जो मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी थे। जिनकी हत्या 661 ई० में कर दी गई।
☛ अली के बेटे हासन हुसैन की हत्या करबला (ईरान) में 680 ई० कर दी गई।
☛ मुहम्मद साहब के उत्तराधिकारी को खलीफा कहा जाता था।
☛ खलीफा का पद 1924 तक रहा। खलीफा पद 1925 ई० में तुर्की के शासक मुस्तफा कमाल पासा द्वारा समाप्त कर दिया गया।
☛ मुहम्मद साहब का जीवन चरित्र इब्न ईशाक द्वारा लिखा गया।
☛ इनके जन्म दिवस को **ईद ए मिलाद उन नवी** के नाम से मनाया जाता है।

- इनका प्रमुख दिन शुक्रवार होता है।
- कुरान मूल रूप से अरबी भाषा में लिखा गया था।
- मुहम्मद साहब के मृत्यु के बाद इस्लाम दो भागों में बँट गया सुन्नी और शिया।
- सुन्नी मुहम्मद साहब के विश्वास पर आधारित था तथा शिया उनके दामाद अली के शिक्षा पर विश्वास करता था।
- मक्का की ओर की दिशा को किबला कहा जाता है। जो नमाज पढ़ने के समय पश्चिम दिशा की ओर खड़े होते है।
- भारत में मुस्लिम पश्चिम दिशा में पूजा करते है। उसका कारण है कि भारत के पश्चिम में मक्का और मदीना है।
- भारत में मुस्लिम धर्म का प्रवेश अरबों द्वारा 712 ई० में हुआ जब अरबो ने सिंध पर आक्रमण किया था। वहां का शासक राजा दाहिर था। जो मुहम्मद बिन काशिम द्वारा आक्रमण किया गया था और उसी समय से इस धर्म का प्रचार प्रसार हुआ और मजबूती के साथ फैलता गया।

➢ **इस धर्म के मानने वालों को 5 अनिवार्य कर्तव्य मानना पड़ता है–**

1. बकरीद के अवसर पर बकरे की कुर्बानी देना चाहिए।
2. प्रतिदिन पाँचों वक्त (फजर, जूहर, असर, मगरीब, ईसा) नमाज पढ़ना चाहिए।
3. जरूरतमंदों को दान (जकात) देना चाहिए।
4. रमजान के महीने में सूर्योदय के पहले से लेकर सूर्यास्त तक रोजा (उपवास) रखना चाहिए।
5. हर मुसलमान को जीवन में कम-से-कम एक बार हज करना चाहिए यानी मक्का स्थित काबा की यात्रा करनी चाहिए।

पारसी धर्म

- पारसी धर्म के पैगम्बर जर थुस्ट्र (ईरानी) थे।
- इनका पवित्र धार्मिक ग्रंथ जेन्दा अवेस्ता है।
- इनके अनुयायी को अग्निपूजक कहा जाता है।
- इनके देवता को अहुर कहा जाता है।
- इनका धार्मिक स्थल अग्निमंदिर होता है।
- पारसी मंदिरों को आतिश बेहराम कहा जाता है।
- इनपर अरबों द्वारा आक्रमण कर जबरन मजबूर करके जरथुस्ट्र को इस्लाम धर्म स्वीकार करने पर मजबूर कर दिया गया जिस कारण वहां से आदमी भागकर भारत आकर गुजरात में बस गए।
- पारसी धर्म की उत्पत्ति ईरान में हुआ था।

❐❐❐

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR